वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

एक दृष्टि में

(वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

प्रतिभा विकास केन्द्र से समाज में संस्कार एवं सामर्थ्य विकसित करने का प्रयास

शास्त्रोक्ति

धर्मो रक्षति रक्षितः।

युग धर्म

वनवासी रक्षति रक्षितः।

संस्कार शिक्षा के द्वारा,
धर्म सत्ता को जगाएंगे।
नगर से गाँव को जोड़कर,
प्रेम की गंगा बहाएंगे।

सहयोग राशि

रु. 5000/– प्रति वर्ष, प्रति परिवार
गोद लेकर वनवासी रक्षा परिवार बनें।

सहयोग राशि को धारा आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के तहत छूट प्राप्त है।

पंजीकृत कार्यालयः बी–4 द्वितीय तल, हाउसिंग सोसाइटी, साउथ एक्स पार्ट–1, दिल्ली–110049
दूरभाष 011–47980066, 47011669, Mobile +91–96672 60911 E-mail: vrpfdelhi8@gmail.com,

हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

— स्वामी विवेकानंद

भेंटकर्ता :

वीरेन्द्र शर्मा

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

बी–4 द्वितीय तल, हाउसिंग सोसाइटी,
साउथ एक्स पार्ट–1, दिल्ली–110049
दूरभाष : 011–47980066, 47011669
मोबाइल : +91–96672 60911
ई–मेल : vrpfdelhi8@gmail.com

मुद्रक :

प्रिन्टेक इन्टरनेशनल,
A-6/D, झिलमिल इंडस्ट्रिल एरिया, दिल्ली–110095
मोबाइल : +91–98110 25848
ई–मेल : printechinternational@gmail.com

प्राक्कथन

वनवासी रक्षा परिवार योजना एवं चिंतन की शुरुआत 2007 में हुई जो 2014 के प्रथम (21–22 दिसंबर 2014) वनवासी रक्षा परिवार कुंभ से रक्षा का सार्थक संदेश हजारों परिवारों तक देने में सफल हुआ। इस मंच से निवृत्त शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी, पू० सरसंघचालक माननीय डॉ. मोहन राव भागवत जी तथा विश्व हिंदू परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष श्रद्धेय अशोक सिंघल जी के मार्गदर्शन द्वारा राष्ट्र रक्षा का संकल्प प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप संगठन का विस्तार एवं विकास की गति बढ़ी। इससे संगठन का विस्तार विभाग से जिला इकाई तक पहुँचा है।

द्वितीय (23–24 फरवरी 2020) कुंभ का लक्ष्य नगर स्तर पर संगठन की इकाईयों का विस्तार करना था। इसके लिए 101 राष्ट्र रक्षा यज्ञों का संकल्प लिया गया था। यह संकल्प 99 यज्ञों के द्वारा संपन्न हुआ, जिससे वनवासी रक्षा के साथ नगरीय समाज संस्कार का संदेश परिवारों तक पहुँचा।

द्वितीय कुंभ के बाद कोरोना की महामारी ने विश्व के साथ भारत को भी संकट में डाला। इस काल में संगठन की इकाइयों ने अपने अनेक उपक्रम द्वारा समाज सेवा का कार्य किया। इन उपक्रमों में कार्यकताओं के साथ समाज के आत्मविश्वास का जागरण हेतु ऑनलाइन मंत्रों के उच्चारण के साथ आसन–प्राणायाम के अभ्यास द्वारा जीवन–रक्षण का कार्य संपन्न हुआ।

कोरोना के आतंकी वातावरण में **दैनिक संस्कार परिवार मिलन योजना** पर चिंतन के साथ कार्य भी प्रारंभ हुआ, इसके द्वारा संगठन से जुड़े परिवारों के साथ अन्य परिवार भी इस दैनिक कार्य से जुड़े। कोरोना संबंधी प्रतिबंध की समाप्ति 28 फरवरी 2022 को हुई। इसके पश्चात् 6 मार्च को ऑनलाइन जुड़े परिवारों का **प्रथम संस्कार परिवार मिलन** मार्कण्डेय भवन छत्तरपुर मंदिर में संपन्न हुआ, जिसमें लगभग 3000 परिवार सहभागी हुए।

परिवार में परिवार के सदस्यों का दैनिक मिलन नगरशः परिवारों का मासिक मिलन तथा वृहद रूप में परिवारों के वार्षिक स्नेह मिलन की परम्परा

विकसित हुई।

वनवासी रक्षा परिवार योजना का आरंभ ही वनवासी तथा वंचित वर्गों के कल्याण तथा रक्षण हेतु हुआ। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रतिभा विकास केन्द्रों का श्रीगणेश 2022 के मई माह में (ग्रीन पार्क के आर्य समाज मंदिर) प्रथम आचार्य प्रशिक्षण वर्ग के द्वारा हुआ। इस वर्ग 23 आचार्य सहभागी हुए। इस योजना का विकास एवं विस्तार दो वर्षों की अल्प अवधि में दिल्ली के नगरीय क्षेत्र से चलते हुए सुदूर असम, बंगाल, उड़ीसा, झारखंड, बिहार, राजस्थान, तमिलनाडु तथा मध्य प्रदेश के झाबुआ जैसे गहन वनवासी क्षेत्रों तक पहुँचा।

प्रतिभा विकास केन्द्र के कार्य–विस्तार के साथ काम के स्वरूप, इसके पीछे के चिंतन को कार्यकर्ताओं के साथ जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता महसूस हुई। यह केवल वर्ग और गोष्ठियों के द्वारा कठिन था। विस्तार की गति को बनाए रखने के लिए तथा संगठन की आवश्यकता को ध्यान में रखकर संगठन के सभी आयामों के चिंतन, कार्य तथा कार्य पद्धति को घर–घर तक पहुंचाने हेतु यह लघु पुस्तिका आपके हाथ में है।

उम्मीद है इस पुस्तिका के द्वारा वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के उद्देश्य, कार्य तथा कार्य–पद्धति को हम सब समझ सकेंगे तथा इस महत्वपूर्ण कार्य को समझकर हम संगठन के सहायक बन सकेंगे। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य **'सनातन परिवार व्यवस्था'** स्थापित करना है। इस उद्देश्य से संस्कार परिवार की योजना प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से वनवासी तथा वंचित समाज तक जाएगा।

इसे स्वीकार कर परिवार के संस्कार तथा परंपराओं की रक्षा के साथ राष्ट्र की रक्षा में हम यशस्वी होंगे। इस कामना के साथ यह पुस्तिका आपके हाथ में देते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

वीरेन्द्र शर्मा

संगठन प्रभारी

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

हमारे शास्त्रों में लिखा है **'धारयति इति धर्मः'** अर्थात जीवन को धारण करने, जीने के शाश्वत नियमों को धर्म कहा है। भारत के सुप्रीम कोर्ट ने भी हिंदू धर्म को **'Way of life'** अर्थात जीवन जीने की शैली बताया है। मनुष्य का शाश्वत संबंध मनुष्य से, परिवार से, समाज से, देश से, प्रकृति तथा पर्यावरण से है। इन संबंधों में जब विकृति तथा असंतुलन का निर्माण होता है तो मनुष्य के साथ परिवार, समाज और देश में अशांति और अव्यवस्था के साथ–साथ पर्यावरण में प्रदूषण की समस्या भी खड़ी हो जाती है। आज का वर्तमान विश्व इन समस्याओं से जूझ रहा है।

भारतीय संस्कृति वनों की संस्कृति है। यह ऋषि प्रधान देश है, ऋषियों ने प्रकृति की गोद वनों में, साधना–चिंतन द्वारा अनुसंधान कर प्रकृति के रहस्य, ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति, चाल, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, उसका मानव पर पड़ने वाला प्रभाव, सुखद मानव जीवन के लिये कृषि व्यापार का उन्नत स्वरूप निर्माण किया। यह विकास प्रकृति से सामंजस्य पूर्ण था, हमने प्रकृति का दोहन किया, शोषण नहीं। नदी–पहाड़–जंगल की सुरक्षा के लिये इन्हें देवता के रुप में पूज्य बनाया। इस चिंतन के कारण लाखों वर्षों से संस्कारित, स्वस्थ तथा सुरक्षित मानव जीवन का विकास हुआ।

गत कुछ सौ वर्षों में विकसित भोगवादी पश्चात्य संस्कृति ने प्रकृति को असंतुलित, प्रदूषण–युक्त ही नहीं किया है, अपितु तनावयुक्त, भोगवादी, अकर्मण्य पीढ़ी को जन्म दिया। अधिकारवादी सोच आज अपनी सुविधा के लिये प्रकृति का शोषण ही नहीं, विनाश कर रही है। परिणामस्वरुप पर्यावरण में असंतुलन बढ़ता जा रहा है, पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है। आज के वैज्ञानिक भी मानते हैं भारतीय संस्कृति जीवन दर्शन, जो कर्तव्य को प्रधानता देता है, दुनिया को आगे बढ़ा सकता है।

भारतीय संस्कृति, जिसे सनातन संस्कृति कहते हैं, जो परिवार व्यवस्था द्वारा व्यक्ति–निर्माण पर आधारित है – वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन इस सनातन वन संस्कृति के पुनः जागरण का कार्य अपनी तीन

योजनाओं द्वारा कर रहा है।

सनातन संस्कार का उद्‌गम स्थल परिवार व्यवस्था है। हमारे ऋषियों द्वारा दिया गया शाश्वत चिंतन **'वसुधैव कुटुंबकम्'** अर्थात पूरा विश्व एक परिवार है। इस परिवार की शांति–समृद्धि का दायित्व हमारा है। इसलिए **''सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया''**, का उद्‌घोष ऋषियों ने किया। यह श्रेष्ठ दर्शन जीवन का अंग बने–ऐसे संस्कारों का बीज गर्भ में ही देने की परंपरा रही है। जर्मनी ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय के एक शोध में बताया है कि गर्भावस्था के समय नकारात्मक भाव बनने से महिला के साथ बच्चा पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसीलिये हिन्दू परिवारों में गर्भावस्था में गर्भवती महिला को सकारात्मक संस्कार देते हैं। परन्तु परिवार व्यवस्था भंग होने के कारण ये परंपराएं कमजोर पड़ती जा रही हैं। फलस्वरूप **''मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, ''अतिथि देवो भवः''** वाली परिवार–व्यवस्था खंडित होती जा रही है। घरों में माता–पिता का अपमान, वृद्धाश्रम के विस्तार इसके परिणाम हैं।

संस्कार परिवार योजना

84 लाख योनियों में मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। भारतीय राज ऋषि भतृहरि ने 84 लाख योनियों और मनुष्य योनि में अंतर बताते हुए कहा है :–

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।।

अर्थात धर्म ही वह आधार है जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है। चुनौती आने पर संस्कार के अनुसार मनुष्य चिंता या चिंतन करता है। चिंता मनुष्य के जीवन को तनायुक्त करती है जो संकट का कारण बनता है, पर चिंतन समाधान की दिशा में आगे बढ़ाता है। हम गत सैकड़ों वर्षों से विदेशी आतंकवादी समाज का बर्बर हिंसक अत्याचार, नरसंहार, अपने मान बिंदुओं के ध्वस्त होने का दृश्य देखने के बाद भी अपने संस्कारों के कारण हमने केवल अपना अस्तित्व ही नहीं बचाया बल्कि विश्व को समय–समय पर शांति, समृद्धि के साथ मानवता का संदेश देते रहे। गुलामी के कठिन काल में भी स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका के शिकागो की सर्वधर्म सभा में **'सिस्टर्स**

एंड ब्रदर्स' शब्दों का संबोधन कर प्राचीन ऋषियों के 'वसुधैव कुटुंबकम्' के चिंतन को ही प्रस्तुत कर सनातन संस्कारों का ध्वज विश्व में फहराया। स्वतंत्रता के बाद मैकालीयन शिक्षा तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण कमजोर पड़ती परिवार व्यवस्था के फलस्वरूप ऐसी पीढ़ी आ रही है जिसके जीवन में सनातन संस्कार प्रभावहीन होते जा रहे हैं। इसलिए परिवारों में सनातन परंपराओं का अभाव दिख रहा है। परिणाम स्वरुप व्यक्ति जीवन में दायित्व को स्वीकारने को तैयार नहीं है। यह केवल भारत ही नहीं, विश्व मानवता के लिए भी संकट का कारण है ।

विश्व में सबसे बड़ा समाज–ईसाई समाज अपने अस्तित्व–रक्षा के संकट से गुजर रहा है। लेबनान कुछ वर्ष पहले ईसाई बाहुल्य था आज मुस्लिम बाहुल्य हो गया है, यूरोपियन देश भयभीत हैं। किसी भी परंपरा को आगे बढ़ाने के जो मूल आधार परिवार होते हैं, पाश्चात्य जगत में यह समाप्त होता जा रहा है। इसलिए पाश्चात्य जगत के विद्वान भारतीय चिंतन की परिवार व्यवस्था के महत्व को क्रमशः स्वीकारने की स्थिति में आते जा रहे हैं।

दूसरा बड़ा समाज, जो दुनिया में आतंकवाद का पर्याय है, अपनी परिवार व्यवस्था के कारण तेज गति से विस्तार पा रहा है। हिंदू धर्म शास्त्रों में दानवों के विजय की कहानी उनके संगठित तथा सक्रिय जीवन का परिणाम बताया गया है।

दुनिया का प्राचीनतम और श्रेष्ठतम जीवन जीने वाला समाज सनातन समाज है जिसके ऋषियों ने संपूर्ण मानवता को मानवीय जीवन का मूल्य समझाया। दुनिया के अधिकांश देशों में इसके चिह्न विद्यमान हैं। इस सनातन जीवन दर्शन को आधुनिक संदर्भ में पुनः स्थापित करने के लिए संस्कार परिवार योजना की रचना वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा की गई है ।

कार्य योजना-परिवार में प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य

प्रातः सूर्योदय से पूर्व जागरण एवं नित्य क्रिया सम्पादन के बाद परिवार के साथ मिलकर सामूहिक करना :–

ब्रह्मनाद ॐ (तीन आवृत्ति)

गायत्री मंत्र (तीन आवृत्ति)

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।।

महामृत्युंजय मंत्र (तीन आवृत्ति)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

मातृ वन्दना

पुरुषार्थ जागरण मंत्र :–

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ।।

क्षमा स्तुति मंत्र :–

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तन मंडले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

त्रिदेव–नवग्रह स्तुति मंत्र :–

ब्रह्मा मुरारीः त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि–राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

भारत वंदन मंत्र :–

हिमालयं समारभ्य यावदेन्दु सरोवरम् ।
तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।
रत्नाकराधौतपदां हिमालय किरीटिनीम्।
ब्रह्मराजर्षि रत्नाढ्यां वंदे भारतमातरम् ।।

निम्नांकित आसनों में से कोई छः आसन नियमित करना अपेक्षित है।

1. ताड़ासन 2. वृक्षासन ३. वीरभद्रासन 4. त्रिकोणासन 5. सर्वांगासन
6. हलासन 7. मण्डूकासन 8 वज्रासन 9. मर्कटासन 10. भुजंगासन
11. धनुरासन 12. पवन मुक्तासन।

प्राणायाम (अंकित न्यूनतम आवृत्ति में किया जाना चाहिए)

1. भस्त्रिका प्राणायाम – 24 आवृत्ति

2. कपालभाति – 120 आवृत्ति (न्यूनतम 2 मिनट)

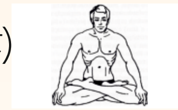

3. अनुलोम–विलोम – 10 आवृत्ति

4. शीतली या उज्जायी – 10 आवृत्ति
(शीतकाल में उज्जायी प्राणायाम)

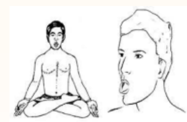

5. भ्रामरी प्राणायाम – 10 आवृति

- राष्ट्रभक्ति गीत / भजन
- बोध कथा / समसामयिक चर्चा – 5 मिनट

टिप्पणी :– पद्मासन या सुखासन में बैठकर मंत्रों का जप करना चाहिए।

परिवार में करणीय कार्य :–

- तुलसी, गिलोय, एलोविरा के पौधे घर के गमला में लगाना।
- सार्वजनिक स्थानों पर नीम–पीपल–बरगद के साथ फलदार वृक्ष लगाना।
- स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना तथा चीनी वस्तुओं का बहिष्कार।
- मातृभाषा एवं स्वदेशी वेश–भूषा का उपयोग।
- घर में महापुरुषों के चित्र लगाना।
- रामायण– महाभारत के महापुरुषों तथा वीर बालकों के जीवन प्रसंग का वाचन।
- माह में एक बार नगरशः सामूहिक संस्कार परिवार मिलन के कार्यक्रम करना।

- वर्ष में एक बार बड़े स्तर पर ऐसे परिवारों का स्नेह मिलन तथा सह भोज के साथ चिंतन करना।
- वर्ष में एक बार वंचित परिवारों के लिए आर्थिक सहयोग देना।

हमारा उद्देश्य समाज के सभी परिवारों को इन गतिविधियों से जोड़ते हुए परिवार में सकारात्मक चिंतन द्वारा संस्कारित, शिक्षित, स्वस्थ, स्वावलंबी, संगठित तथा सुरक्षित परिवार बनाना है ।

इन गतिविधियों के द्वारा संस्कारित भारत, स्वस्थ भारत, स्वावलंबी भारत, संगठित तथा सुरक्षित भारत ही विश्व गुरु बनेगा तथा विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

प्रतिभा विकास केंद्र

भारत को संस्कारित, स्वस्थ, स्वावलंबी, संगठित, सुरक्षित, शिक्षित तथा विश्व गुरु भारत बनाने में वनवासी तथा वंचित समाज का सर्वाधिक योगदान रहा है। देश का इतिहास बताता है कि जब–जब विदेशी तथा आसुरी शक्तियों का आक्रमण हुआ है चाहे आंतरिक हो या बाह्य, राम का काल हो या कृष्ण का काल हो, इतिहास में गुरु गोविन्द सिंह के आह्वान पर आगे आने वाले पंच प्यारे हो या शिवाजी, महाराणा प्रताप को साथ देने वालों में हमेशा वनवासी तथा वंचित समाज के लोगो ने अग्रणी भूमिका निभाई है।

दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के बाद दिशा तथा दृष्टिहीन अपनी सरकार ने इन्हें केवल संस्कारों से वंचित ही नहीं किया अपितु शिक्षा – स्वास्थ्य – स्वावलंबन तथा सुरक्षा से भी वंचित कर दिया। जंगल–पहाड़–पिछड़े गांव तथा शहरों की झुग्गियों में रहने वाला यह हमारा स्वाभिमानी समाज आज समुचित शिक्षा, संस्कार आदि की सुविधा से वंचित होकर कष्टमय जीवन जीने को विवश है तथा विदेशी शक्तियों के षड्यंत्र का शिकार होकर अपने प्रिय संस्कृति, गौरवशाली परंपरा तथा अपने पूर्वज शबरी, हनुमान, सुग्रीव नल–नील से दूर होकर अपने आराध्य राम–लक्ष्मण को भी भूलता जा रहा है।

देश के स्वाभिमान के लिए लड़ रहे महाराणा प्रताप के साथ झाला सरदार बनकर खड़ा होता है तो शिवाजी के साथ मावले वीर बनकर खड़ा

होता है यह समाज। परन्तु आज विदेशी तत्वों के प्रभाव में आकर देश विरुद्ध में आतंकवादी और उग्रवादी बनता जा रहा है। यह जीवन उसकी अनभिज्ञता तथा विवशता का परिणाम है ।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से इन परिवारों तथा परिवारों के बच्चों में शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन, स्वास्थ्य तथा सुरक्षा निर्माण का कार्य कर रहा है।

कार्य योजना

विद्यार्थी – सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले ग्रामीण, वनवासी तथा नगर के झुग्गियों में रहने वाले चतुर्थ–पंचम–षष्ठ कक्षा के अभावग्रस्त परिवार के बच्चे–बच्चियाँ प्रतिभा विकास केन्द्र के विद्यार्थी होंगे ।

आचार्य – इसी परिवेश में रहने वाले 12वीं पास कोई भैया–बहन केंद्र के आचार्य बन सकते हैं ।

प्रशिक्षण – आचार्य बनने के लिए प्राथमिक प्रशिक्षण अनिवार्य है जो त्रिदिवसीय होगा। यह पूर्ण आवासीय प्रशिक्षण होगा जिसमें आचार्यों को दो रात तथा 3 दिन वर्ग स्थल पर ही रहना होगा। एक दिन के लिए संचालन समिति के संयोजक भी इस वर्ग में रहकर अपनी कार्यपद्धति व दायित्व समझेंगे।

स्थान – जहां केंद्र चलेंगे – स्थानीय लोगों के सहयोग से सार्वजनिक स्थान (वह मंदिर, सामुदायिक भवन, चौपाल या व्यक्ति विशेष का निःशुल्क घर हो

सकता है) प्राप्त होना चाहिए।

नोट – आचार्य को अपने घर में केंद्र चलाने की अनुमति नहीं होगी ।

पंजीयन – एक केंद्र में 25 से 30 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करेंगे। वर्ष में एक बार नगरीय क्षेत्र में 50/– रु. तथा ग्रामीण क्षेत्र में 25/– रु.पंजीयन शुल्क प्रति विद्यार्थी देना है ।

शिक्षण का काल – प्रतिदिन 2 घंटे

शिक्षण विषय – 30 मिनट संस्कार पद्धति का अभ्यास अनिवार्य रूप से, बाकी के 90 मिनट में दो कालांश कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार तथा सप्ताह में एक कालांश प्रतिभा विकास की दृष्टि से रहेगा।

कार्य दिवस – सप्ताह में 6 दिन शिक्षण कालांश होगा।

छुट्टियां – संगठन द्वारा निर्धारित दिवस पर छुट्टी दी जाएगी , साप्ताहिक छुट्टी रविवार को छोड़कर (अन्य किसी दिवस में स्थानीय समिति द्वारा निर्धारित) ।

संचालन समिति – स्थानीय पांच बंधुओं की समिति केंद्र का संचालन करती है। यह ध्यान रहे कि केन्द्र प्रारंभ होने के पूर्व जिस गाँव में केन्द्र शुरु करना है, सर्वप्रथम सम्पर्क द्वारा गाँव के ऐसे हिन्दू विचार वाले व्यक्ति को संयोजक चयनित करना जो सनातन संस्कृति के सम्मान एवं संरक्षण के प्रति जागरुक व उत्साहित हो। उनका मनोनयन संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ता द्वारा होगा। समिति में महिला–पुरुष कोई भी हो सकता है।

1. **संयोजक** – संगठन द्वारा नामित व्यक्ति।

2. **संरक्षक** – स्थान तथा सुविधा उपलब्ध करने वाला व्यक्ति।

3. **मार्गदर्शक** – शिक्षा में आचार्य को सहयोग देने वाले व्यक्ति।

4. **अभिभावक प्रतिनिधि** – केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक जो सक्रिय हों।

5. **आचार्य** – सदस्य रहेंगे ।

शिक्षा के साथ बच्चों की व्यक्तिगत प्रतिभा यथा – नृत्य, गायन, वादन, चित्रकारी, अभिनय, हस्तकला, खेल इत्यादि के क्षेत्र में समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी हमारा उद्देश्य है।

परिवार मिलन – माह में एक दिन बच्चों के परिवार केंद्र पर आएंगे। परिवारों को संस्कार, स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा बच्चों के विकास की गतिविधियों से उनको जोड़ने का उपक्रम इस माध्यम से होगा।

भाव जागरण – भारत हमारी माता है, हम सब इसकी संतान हैं, इस नाते हम सब भाई–भाई हैं। हम याचक नहीं दाता (देने वाले) बनेंगे। दाता के भाव जागरण हेतु केंद्र में पढ़ने वाले बच्चे मोहल्ले के अपने से छोटे बच्चों को संस्कार तथा शिक्षा देंगे।

मासिक योजना तथा समीक्षा वर्ग

योजना – सामान्यतः माह के अंतिम रविवार को सभी आचार्य प्रातः 09:00 से 05:00 बजे तक विभिन्न सत्रों में अपने केंद्र की शिक्षा तथा संस्कार की योजना बनाएंगे। अगले माह के पाठ्यक्रमानुसार अध्यापन का लक्ष्य तय करेंगे।

समीक्षा – गत माह निर्धारित पाठ्यक्रम की पूर्ति के साथ परिवार की सहभागिता, उत्सव–पर्व, त्यौहारों के आयोजन एवं इसकी व्यवस्था व प्रभाव आदि के साथ पूरे माह में बच्चों की उपस्थिति की समीक्षा प्रतिमाह करना तथा इसके आलोक में कमियों को दूर करने की अनुवर्ती योजना करना।

पर्व तथा त्यौहार – समाज की परंपरा को बताने वाले, समाज को जोड़ने वाले, राष्ट्रीय पर्व केंद्र पर मनाए जाएंगे। रामनवमी, सरस्वती पूजा, रक्षाबंधन, गुरुपूर्णिमा, तथा मकर संक्रांति यह विशेष पद्धति से मनाए जाएंगे। हर केन्द्र वर्ष में एक बार वार्षिक उत्सव करेगा जिसमें बच्चों की प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ–साथ ग्रामीणों की सहभागिता एवं मार्गदर्शन होता है।

इस कार्य योजना के द्वारा (समाज को संस्कारित, शिक्षित, समतायुक्त समरस, सबल, सुरक्षित तथा 'विश्व गुरु भारत' बनाने के संकल्प के साथ) प्रतिभा विकास केंद्र का संचालन स्थानीय समिति के सहयोग से संस्था कर रही है ।

रक्षा परिवार योजना –

'नर सेवा–नारायण सेवा' सनातन धर्म का मूलमंत्र रहा है। इस मंत्र के द्वारा समता तथा समरसता युक्त समाज निर्माण का चिंतन ऋषियों ने दिया था। कालक्रम में कमजोर होते इस चिंतन के कारण समाज में कमजोर और संपन्न वर्ग के बीच दूरियां बढ़ीं। गरीबी एक अभिशाप है, इसको दूर करने के लिए ऋषियों ने दान की महिमा स्थापित की तथा त्यागयुक्त भोग का विचार दिया।

ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

प्रसिद्ध भारतीय मनीषी दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय अर्थ जीवन की दिशा में लिखा है, ''अर्थ का अभाव मनुष्य को पशुवत् जीवन जीने को विवश करता है पर अर्थ का प्रभाव मनुष्य को रावण बना देता है। दोनों में संतुलन बैठाने के काम के लिए दान की महिमा बताई गई है।''

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन समाज के संपन्न बंधुओं द्वारा चाहे वह आर्थिक दृष्टि से हो या संस्कारों की दृष्टि से हो या चिंतन की दृष्टि से हो, वे समाज के कमजोर बंधुओं का सहयोग करें, यह प्रयत्न वनवासी रक्षा परिवार की समितियों द्वारा किया जा रहा है।

संपन्न वर्ग राम की भूमिका में आकर वनवासी तथा वंचित समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, स्वावलंबन, सुरक्षा की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए तन–मन–धन से सहयोगी बने, ऐसे सहयोगी परिवारों को ही हम **'रक्षा परिवार'** कहते हैं।

देश तथा समाज का सर्वांगीण विकास सभी प्रबुद्ध नागरिकों का दायित्व है, पर यह दायित्व संपन्न, जागृत तथा प्रबुद्ध व्यक्तियों का विशेष रूप से है – वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के कार्यकर्ता समाज के बंधुओं से मिलकर कराते हैं। भगवान राम ने अपने जीवन के बहुमूल्य प्रारंभिक 14 वर्ष वनवासी समाज के जागरण, शिक्षण तथा संगठन में लगाये और इन वनवासियों के सहयोग से रावण जैसे भयानक अधिकारवादी तथा स्वेच्छाचारी का संहार कर सर्वलोककल्याणकारी राम–राज्य की स्थापना की। आज का नगरीय

समाज अपने समय, साधन तथा चिंतन का उपयोग करते हुए वर्तमान रावण रूपी विदेशी, आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद तथा मतांतरण से अपने समाज को बचाने हेतु **रक्षा परिवार** बनकर आगे आएँ तथा रामराज की स्थापना कर **विश्व गुरु भारत** बनाने में सहयोगी बनें, यह राष्ट्र की आवश्यकता है। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में राम राज्य की सरल व्याख्या की है।

'दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज कहहूं नहीं व्यापा' – वर्तमान में इस त्रिविध ताप से (वंचित वनवासी समाज को) मुक्त करने का कार्य प्रबुद्ध तथा सम्पन्न वर्ग करें।

रक्षा परिवार योजना का उद्देश्य

1. नगरीय समाज को वनवासी एवं वंचित समाज के समीप लाकर उनकी समस्याओं से परिचय कराना।
2. अगले 5 वर्षों में एक लाख नगरीय परिवारों को वनवासी तथा वंचित परिवार को गोद लेने के लिए तैयार करना अर्थात रक्षा परिवार बनाना।
3. नगरीय तथा वनवासी क्षेत्रों में सांस्कृतिक जनजागरण हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करना।
4. वनबंधुओं के सांस्कृतिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए स्वरोजगार का प्रशिक्षण देना ।
5. संस्कार शिक्षा के माध्यम से व्यसन तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता पैदा करना।

6. युवा बंधुओं को स्थानीय संसाधन–गाय गोबर तथा वन–संपदा पर आधारित जैविक खेती तथा उसके माध्यम से उस पर आधारित स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना और प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

7. सनातन संस्कृति, संस्कार, नैतिक मूल्यों एवं परंपराओं के संरक्षण–संवर्धन के प्रयासों को प्रोत्साहन देना।

8. वनवासियों की परंपरा और आध्यात्मिक आस्थाओं को बढ़ाना और उन्हें भय, प्रलोभन से किया जाने वाले मतांतरण (धर्मांतरण) से बचाना।

9. अधिकाधिक वनयात्राओं का आयोजन कर वनांचलों में वनतीर्थ पर्यटन को बढ़ावा देना जो वनबंधुओं के आर्थिक विकास में सहयोगी होगा।

10. जल, जंगल, जमीन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए कार्य करना।

11. वनबंधुओं को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना और सरकारी योजनाओं की जानकारी देना।

12. नगरीय परिवार को 'संस्कार परिवार योजना' के साथ जोड़कर उन्हें स्वस्थ, सुरक्षित तथा संस्कारित बनाना।

वनयात्रा के द्वारा नगरीय संपन्न, प्रबुद्ध तथा जागरूक परिवार को वनवासी तथा वंचित समाज की समस्याओं से भावनात्मक तथा क्रियात्मक रूप में जोड़ने हेतु संस्था प्रतिवर्ष नगरीय समाज को वनवासी क्षेत्र में यात्रा

द्वारा वनवासी समस्याओं के साथ वनवासी तीर्थ क्षेत्र का भ्रमण कार्य कराती हैं। वनवासी संस्कृति से उनके अतिथि सत्कार की पद्धति नगरीय समाज को आकर्षित करती है। आज भी सनातन संस्कृति का अनुभव वनवासी क्षेत्रों में प्रभावी रूप से होता है।

नगरीय झुग्गियों में चलने वाले केंद्रों का दर्शन प्रतिमाह करने की परंपरा विकसित की जा रही है।

कार्य पद्धति

वनवासी रक्षा परिवार के विस्तार के लिए सभी स्तर पर—केंद्र, प्रांत, विभाग, जिला, नगर तथा ग्राम में समितियों के साथ संस्कार परिवार का निर्माण तथा सुदृढ़ीकरण। समितियों के निर्माण, सुदृढ़ीकरण और विस्तार के लिए समिति कार्यकर्ता निम्नलिखित कार्य करते हैं –

1. **दैनिक** – परिवारों में मिलन
2. **मासिक बैठक और परिवारों का मिलन** – पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा, आगामी योजना पर चिंतन, क्षेत्र की गतिविधियों की जानकारी एवं नए रक्षा परिवार तथा संस्कार परिवार बनाने की योजना।

3. विचार गोष्ठी – वर्ष में एक बार नगरवासियों के मध्य नगर तथा वन क्षेत्र में अपने कार्य के उद्देश्य की जानकारी देते हुए कार्य के विस्तार की अनिवार्यता प्रतिपादन करना ।

4. वनयात्रा – वर्ष में एक बार जिलाशः नगर वासियों को वनवासी गांव में चल रहे प्रतिभा विकास केन्द्रों एवं विकास के अन्य प्रकल्पों का दर्शन करवाना ।

5. कार्यक्रम – दिल्ली तथा देश में जिलाशः कार्यक्रम तथा केंद्र स्तर पर वार्षिक कार्यक्रम द्वारा देश के सभी क्षेत्रों में संगठन के संदेश का प्रसार ।

6. वार्षिक कार्यकर्ता वर्ग – दिल्ली में संभागशः तथा देश में प्रांतशः, वर्ष में एक दिन का वर्ग जिसमें सभी स्तर की समितियों के विस्तार, विकास एवं दृढ़ीकरण के वैचारिक प्रशिक्षण के साथ योजना बनायी जाती है ।

7. केन्द्रीय समिति बैठक – वर्ष के मध्य में दो दिवसीय आवासीय वर्ग । इस वर्ग में दिल्ली के जिला तथा देश की उप समितियों तथा प्रांत के दायित्ववान कार्यकर्ताओं का संगठन के अधिष्ठान और कार्यपद्धति, कार्यक्रम के साथ रक्षा परिवार एवं संस्कार परिवार के विस्तार पर चिंतन एवं योजना बैठक करते है ।

8. उप समिति का निर्माण – सम्पूर्ण भारत वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का कार्यक्षेत्र है, विशेष रूप से महानगरों में उप समिति का विस्तार अपेक्षित है ।

संगठनात्मक संरचना-एक नजर में (At A Glance)

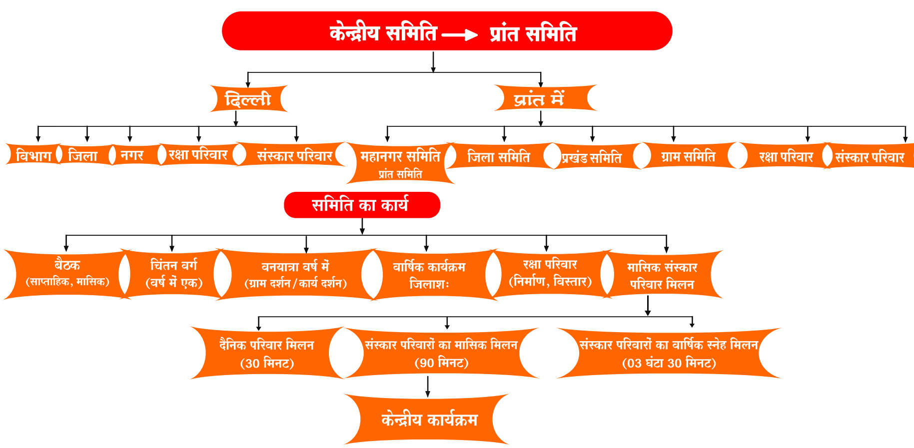

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

द्वारा संचालित - प्रतिभा विकास केन्द्र

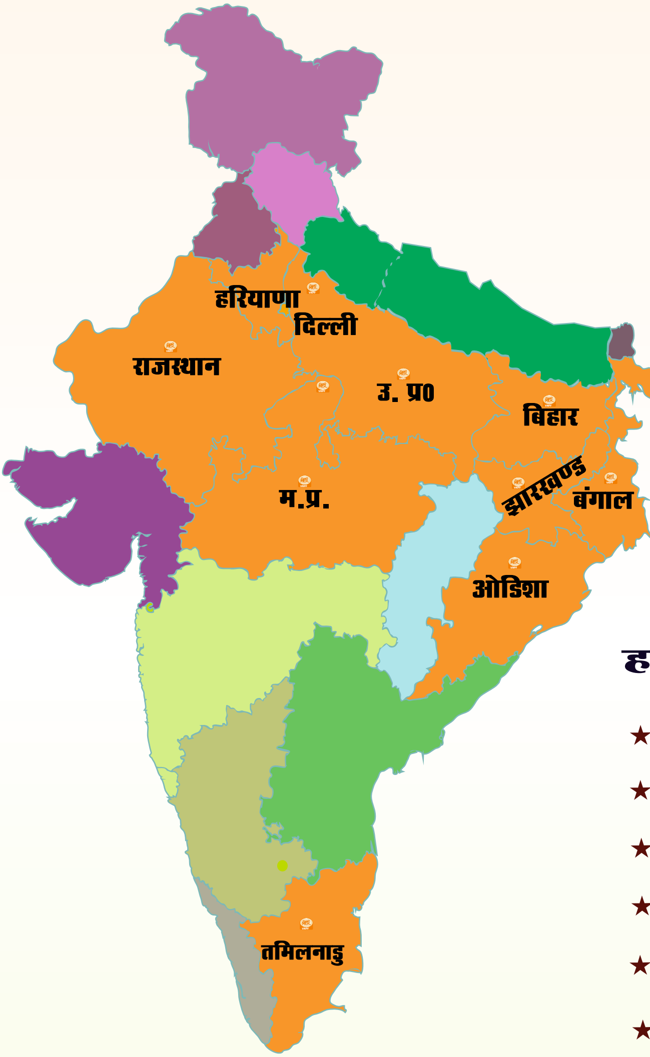

हमारे कार्य का व्याप

★ दिल्ली
★ हरियाणा
★ उत्तर प्रदेश
★ बिहार
★ झारखण्ड
★ असम
★ बंगाल
★ ओडिशा
★ राजस्थान
★ मध्य प्रदेश
★ तमिलनाडु